International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में मानव

Bhailalbhai Narsinhbhai Patel, Dr.Bnsidhr Upadhyay
(M.Sc drugs – B.Ed)

Submitted: 10-01-2021 Revised: 23-01-2021 Accepted: 26-01-2021

मनुष्य की उत्पत्ति

मनुष्य की उत्पत्ति का सिद्धांत हर धर्म में अलग-अलग है। हालांकि विज्ञान सभी से अलग सिद्धांत प्रतिपादित करता है। यदि हम बाइबल में उल्लेखित आदम से लेकर ईसा मसीह तक के ईशदूतों की उम्र की गणना करें तो **3,572** वर्ष मनुष्य की उत्पत्ति के होते हैं। ईसाई मत के जानकार स्पीगल के अनुसार यह अवधि **6,993** वर्ष की मानी गई है और कुछ और संशोधनवादियों ने यह समय **7,200** वर्ष माना है अर्थात मनुष्य की उत्पत्ति हुए मात्र **7,200** वर्ष से कुछ अधिक समय व्यतीत हो चुका है। लेकिन हिन्दू धर्म में इसको लेकर भिन्न मान्यता है।

संसार के इतिहास और संवतसरों की गणना पर दृष्टि डालें तो ईसाई संवत सबसे छोटा अर्थात **2016** वर्षों का है। सभी संवतों की गणना करें तो ईसा संवत से अधिक दिन मूसा द्वारा प्रसारित मूसाई संवत **3,583** वर्ष का है। इससे भी प्राचीन संवत युधिष्ठिर के प्रथम राज्यारोहण से प्रारंभ हुआ था। उसे **4,172** वर्ष हो गए हैं। इससे पहले कलियुगी संवत शुरू **5,117** वर्ष पहले शुरू हुआ।

इब्रानी संवत के अनुसार **6,029** वर्ष हो चुके हैं, इजिप्शियन संवत **28,669** वर्ष, फिनीशियन संवत **30,087** वर्ष। ईरान में शासन पद्धति प्रारंभ हुई थी तब से ईरानियन संवत चला और उसे अब तक **1,89,995** वर्ष हो गए। ज्योतिष के आधार पर चल रहे चाल्डियन संवत को **2,15,00,087** वर्ष हो गए। खताई धर्म वालों का भी हमारे भारतीयों की तरह ही विश्वास है कि उनका आविर्भाव आदिपुरुष खता से हुआ। उनका वर्तमान संवत **8,88,40,388** वर्ष का है। चीन का संवत जो उनके प्रथम राजा से प्रारंभ होता है वह और भी प्राचीन **9,60,02,516** वर्ष का है।

अब हम अपने वैवस्तु मनु का संवत लेते हैं, जो **14** मन्वंतरों में से एक है। उससे अब तक का मनुष्योत्पत्ति काल **12,05,33,117** वर्ष का हो जाता है जबकि हमारे आदि ऋषियों ने किसी भी धर्मानुष्ठान और मांगलिक कर्मकांड के अवसर पर जो संकल्प पाठ का नियम निर्धारित किया था और जो आज तक ज्यों का त्यों चला आता है उसके अनुसार मनुष्य के आविर्भाव का समय **1,97,29,447** वर्ष होता है।

धरती की उत्पत्ति

एवं विद्येरहौरात्रै: काल गत्योप लक्षितै:।
अपक्षितामि वास्यापि (ब्रह्माण:) परमापुर्वय: शतम्।।
यदर्धमायुषस्तस्य परार्धमभिधीयते।
पूर्व: परार्धोउपक्रान्तो ह्यपरोऽद्य प्रवर्तते।। - **3/11-32-33**अर्थात

ब्रह्माजी की आयु **100** वर्ष की है। उसमें पूर्व परार्ध (**50** वर्ष) बीत चुका है व द्वितीय परार्ध प्रारंभ हो चुका। त्रैलोक्य की सृष्टि ब्रह्माजी के दिन प्रारंभ होने से होती है और दिन समाप्त होने पर उतनी ही लंबी रात्रि होती है। एक दिन एक कल्प कहलाता है।

मनुस्मृति में कल्प की लंबाई के लिए लिखा है:-
देविकाना युगाना तु सहस्रं परिसंख्यया।
ब्राह्ममेकमहज्ञेयं तावतीं रात्रिमेव च।। **1/72**अर्थात
ब्रह्माजी का एक दिन (कल्प) देवताओं के **1,000** युगों (चतुर्युगों) के बराबर होता है तथा उतनी ही लंबी रात्रि होती है।

यह एक दिन 1. स्वायम्भुव, **2.** स्वारोचिष, **3.** उत्तम, **4.** तामस, **5.** रैवत, **6.** चाक्षुष, **7.** वैवस्वत, **8.** सावर्णिक, **9.** दक्ष सावर्णिक, **10.** ब्रह्म सावर्णिक, **11.** धर्म सावर्णिक, **12.** रुद्र सावर्णिक, **13.** देव सावर्णिक और **14.** इन्द्र सावर्णिक- इन **14** मन्वंतरों में विभाजित किया गया है। इनमें से 7वां वैवस्वत मन्वंतर चल रहा है। **1**

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

मन्वंतर **1000/14** चतुर्युगों के बराबर अर्थात **71/3/8 (71.42)**चतुर्युगों के बराबर होता है।

भिन्न संख्या पृथ्वी के **27/1/4** प्रतिशत झुके होने और **365/1/4** दिन में पृथ्वी की परिक्रमा करने के कारण होती है। इस भिन्न को जैसा कि सूर्य सिद्धांत **1/19** के अनुसार **2** मन्वंतरों के बीच का संधिकाल मान लिया गया है जिसका परिमाण **4,800** दिव्य वर्ष (सतयुग काल) माना गया है अत: अब मन्वंतरों का काल=**14 × 71=994** चतुर्युग।

15 संधियों का समय= **4800 × 15=72,000=6** चतुर्युग कुल **994+6=1,000** चतुर्युगों में मन्वंतर बंटे हैं और एक चतुर्युग **1,2000**दिव्य वर्षों का हुआ। यहां प्रत्येक मन्वंतर के बीच **4,800** वर्ष का सतयुग होना बताया गया है। उससे यह बात पुष्ट हो जाती है कि कलयुग का द्वितीय चरण प्रारंभ होने से पूर्व **4,800** वर्षों तक धर्म की चरम उन्नति होगी और सतयुग जैसा सुख लोगों को मिलेगा। एक युग में अनेक युग बर्तने के सिद्धांत के आधार पर ऐसा प्रत्येक मन्वंतर में होता रहेगा।

महाभारत वन पर्व 188/22-26 में चतुर्युगों का परिमाण अलग-अलग बताते हुए लिखा गया है-

4,000 दिव्य वर्षों (अर्थात **4-4** सौ वर्ष) उसके संध्या व संध्यांश होते हैं अर्थात कुल **8,400** वर्ष का सतयुग, **3,000** वर्षों का त्रेतायुग उसकी संध्या व संध्यांश के **3-3** सौ वर्ष कुल **3,600** वर्ष, **2,000** दिव्य वर्ष और **2-2** सौ संध्या व संध्यांश=**2,400** वर्ष का द्वापर और **1,000** वर्ष व **1-1** सौ वर्ष का कुल **1,200** वर्ष का कलियुग। इस हिसाब से एक चतुर्युग **4800+3600+2400+1200** वर्ष =**1,2000**दिव्य वर्ष हुए।

अब दिव्य वर्ष का मनुष्य वर्ष से हिसाब लगाएं तो मनुस्मृति के अनुसार-

दवे रात्रहनी वर्ष प्रविभागस्तयो:पुन।
अहस्तत्रोद गयनं रात्रि: स्याद् दक्षिणायनम्।।

अर्थात

देवताओं का एक दिव्य रात-दिन मनुष्य के 1 वर्ष के बराबर होता है। उत्तरायन सूर्य दिन और दक्षिणायन रात्रि होती है।

1. ब्रह्माजी (पृथ्वी की उत्पत्ति काल) **51**वें वर्ष के प्रथम दिन के **6** मन्वंतर और **7** संधियां बिता चुके। **2. 7**वें वैवस्वत मन्वंतर के **27** चतुर्युग अपनी संधियों के साथ बीत चुके। **3.**प्रचलित **28**वें चतुर्युग में भी प्रथम तीनों (सतयुग, द्वापर, त्रेता) युग बीत चुके। **4.** अब कलियुग के विक्रम संवत **2073** तक **5,119** वर्ष बीत चुके।

इस हिसाब से **6** मन्वंतर=**671** चतुर्युग=**6 × 71 × 12,000** दिव्य वर्ष=**51,12,000** दिव्य वर्ष। इनकी **7** संधियों का समय**7 × 4800 = 33,600**दिव्य वर्ष, **7**वें वैवस्वत मन्वंतर के **12,000 ×27=3,24,000** दिव्य वर्ष, **3** युग इस वैवस्वत के बीत चुके उनका योग **4,800+3600+2,400** दिव्य वर्ष=**10,800** कुल, **51,12,000+33,600+3,24,000+10,800= 54,80,400** दिव्य वर्ष।

दिव्य वर्ष में **360** का गुणा करने से मनुष्य वर्ष आ जाते हैं। (भारतीय मतानुसार वर्ष **360** दिन का ही होता है। प्रक्षेप संधियों के रूप में जुड़ गया)। वह **54,80,400× 360=1,97,29,44,000** मनुष्य वर्ष होते हैं। इसमें कलियुग के **5,119** वर्ष जोड़ने से **1,97,29,44,000+5,119=1,97,29,49,119** वर्ष अक्षरों में **1** अरब **97** करोड़ **29** लाख उनपचार हजार **119** वर्ष पृथ्वी की आयु हुई। भूगर्भ शास्त्री यह आयु **1** अरब **98** करोड़ वर्ष निकालते हैं जबकि उनकी गणना पदार्थों के गुण से संयुक्त है और भारतीय आंकड़े शुद्ध गणित। दोनों में इतने हद तक साम्य भारतीय दर्शन की सत्यता और प्रामाणिकता ही सिद्ध करते हैं।

धर्म का शाब्दिक अर्थ

धर्म को अंग्रेजी में रिलिजन (**religion)** और ऊर्दू में मजहब कहते हैं, लेकिन यह उसी तरह सही नहीं है जिस तरह की दर्शन को फिलॉसफी (**philosophy)** कहा जाता है। दर्शन का अर्थ देखने से बढ़कर है। उसी तरह धर्म को समानार्थी रूप में रिलिजन या मजहब कहना हमारी मजबूरी है। मजहब का अर्थ संप्रदाय होता है। उसी तरह रिलिजन का समानार्थी रूप विश्वास, आस्था या मत हो सकता है, लेकिन धर्म नहीं। हालांकि मत का अर्थ होता है विशिष्ट विचार। कुछ लोग इसे संप्रदाय या पंथ मानने लगे हैं, जबकि मत का अर्थ होता है आपका किसी विषय पर विचार।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

यतो ऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।
धर्म वह अनुशासित जीवन क्रम है, जिसमें लौकिक उन्नति (अविद्या) तथा आध्यात्मिक परमगति (विद्या) दोनों की प्राप्ति होती है।

धर्मशब्दकीव्युत्पत्ति

धर्म एक संस्कृत शब्द है। धर्म का अर्थ बहुत व्यापक है। ध + र् + म = धर्म। ध देवनागरी वर्णमाला **19**वां अक्षर और तवर्ग का चौथा व्यंजन है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह दन्त्य, स्पर्श, घोष तथा महाप्राण ध्वनि है। संस्कृत (धातु) धा + ड विशेषण- धारण करने वाला, पकड़ने वाला होता है। जो धारण करने योग्य है, वही धर्म है। पृथ्वी समस्त प्राणियों को धारण किए हुए है। जैसे हम किसी नियम को, व्रत को धारण करते हैं इत्यादि। इसका मतलब धर्म का अर्थ है कि जो सबको धारण किए हुए है अर्थात धारयति- इति धर्मः!। अर्थात जो सबको संभाले हुए है। सवाल उठता है कि कौन क्या धारण किए हुए हैं? धारण करना सही भी हो सकता है और गलत भी।

धर्म शब्द का मूल धातुधु है। जिस का अर्थ है - धरना , धारण करना , ग्रहणकरना, स्थापितकरना, पकड़ना, पकड़ कर संभालना। शब्द कल्प द्रुम शब्द कोश धर्म की पदव्याख्या देता है - 'धरतिलोकान् '

।जो सभी भुवनो को घर पर संभालने वाला है वह धर्म है। वामनशिवराम आप्टेका शब्द को शभी दूसरे शब्दों मे इसी को दोहराता है।उसके अनुसार धर्म जो

धियते लोकोऽनेन , धरतिलोकं वा।

धर्म के संबंध में धातुका अर्थमात्र लौकिक दैहिक क्रियातक सीमित नहीं है वरन उसके कहीं अधिक व्यापक अर्थ इस शब्द में समाहित है।

दो शब्द है , मुरलीधर एवं गंगाधर मुरली को धरने वाला मुरली मुरलीधर है। इस दृष्टि से देखा जाए तो सिर पर 100 - 100

मुरली योंक। टोकरा रखकर हाथ में एक मुरली पकड़कर गली गली के घर घर जाकर मुरली बेचने वाले व्यवसाई को मुरली धर कहना पड़ेगा। हम जानते हैं कि वह केवल जीवन यापन के लिए मुरली लेकर घूमता है। जीवन वृत्ति से परे उसका मुरली से कोई संबंध नहीं।

साक्षात मुरलीधर , मुरली अपने मधुर कंठस्वर को मधुर उत्तम बनाने का स्वयं स्वीकृत प्रयास है , माने। वह मुरली अतिरिक्तक मैं द्रिय है। मुरली से मुरलीधर को सफलतापूर्वक काम निभाना है। गायों के झुंडको बिना रस्सी नियंत्रण में रखना है। सहायक समस्त गोपी गोपियों को समरसता पूर्वक लेकर चलना है। वृंदावन के गुरुजनों के आगमन एवं प्रस्थान के पहले पूर्व सूचना मनोहरी ढंग से देनी है। इसके लिए कन्हैया ने जो साधन अपनाया इस मुरली को धारण किया उससे उसका व्यक्तित्व सामासित हुआ। और श्री मुरलीधर बन गए। मुरली को धरने वाले अनेक होंगे परं तुसाक्षात मुरलीधर एक ही है

यही गंगाधर गंगा को धारण करने वाला है। देखा जाए तो विशेषकर श्रावण मास में पूरे देश में कांवड से गंगा कलश गांव -गांव ले जाने वाले करोड़ों गंगाधर होंगे। परंतु हम सबके मानस के सम्मुख गंगाधर एक मात्र है , गंगाजी को अपनी जटाओं में धारण करने वाला महादेव। उस धारण में एक लक्ष्य है, एक तप है। स्वर्ग गंगा के प्रचंडप्रपात को करने वाला अत्यंत प्रबल अधिष्ठान पृथ्वी पर अनिवार्य था जिसको महादेव ने प्रदान किया अपना जटाधारी शीर्ष। वहां से गंगाजी का जीवनलक्ष्य , पाप प्रक्षालन और पुण्य प्रदान करना प्रारंभ हुआ। उसके कारण ही महादेव गंगाधर बने।

धारण करने की आवश्यकता क्यों?

'धारणात्धर्म' कहा गया है। किंतु इसकी आवश्यकता क्यों महसूस हुई? उत्तर ढूंढने के लिए हमें सृष्टि की प्रक्रिया की ओर बढ़ना पड़ेगा। एक पुरुष है और वह अकेला है कहीं पर भीधंधे के लिए जा सकता है। कहीं भी ठहर सकता है। कभी भी अपना ठिकाना बदल सकता है, वह स्वयं का स्वामी है, उसे धारण करने की आवश्यकता या अनिवार्यता अन्य किसी की भी नहीं है। किंतु काल की गति के परिणाम स्वरुप आगे चलकर एक सफल गृहस्थ बन जाता है, निसर्ग के कर्मों के अनुसार वह अधिक संतानों का पिता बन जाता है। इस प्रकार पत्नी

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

और संतानों सहित एक बड़े परिवार की रचना हो जाती है। परिवार के सारे अंग अपनी अपनी रूचि के अनुसार अपना अपना जीवन बिताते हैं अब उस मूल पुरुष ने सब की ओर ध्यान ना देते हुए , सबको स्वच्छंद छोड़ दिया तो आपसी संघर्ष भी संभव है,. समन्वय भी संभव है,. वांछनीय तो समन्वय है उसी के कारण परिवार का विकास होगा,. सबका जीवन सुखी होगा उसके लिए परिवार के मुखिया द्वारा सभी बंधुओं को सामूहिकता के सूत्र में पिरोना पड़ता है,. सबको बिना संघर्ष एवं मत्सर के साथ संभ।लना पड़ता है। यहां उनकी आवश्यकता बिल्कुल नहीं थी जब वह अकेला था। जब वह एक अनेक रूपों में प्रकट हुआ, पकड़कर रख ना जरूरी होता है।

धर्म का महत्व

भारत के किसी भी प्रांत के पंडित -अपंडित, दार्शनिक, प्रवचनकार ,पुजारीपुरोहित, आचार्य,अध्यापक, लेखक,निर्देशक, आदि के ओठों से निकलने वाला उदाहरण है 'धर्म एव हतोहंति , धर्मोरक्षतिरक्षितः ' –

जिसका अर्थ है बचाया हुआ धर्म बचाता हैमारा हुआ धर्म मारता है।

इसी प्रकार की औरएकआधीपंक्तिहै , "यतोधर्मस्ततोजय:"

।अर्थात, जहां धर्म है वही जीत है। यह सुभाषित हमारे सर्वोच्चन्यायालय में न्याय मूर्ति के सर्वमान्य प्रतिष्ठित स्थान के पीछे देवनागरी वर्णों में अंकित है। यह उस संस्था का बोध वाक्य है।उसी प्रकार भारत में अनेक समाचार पत्रहै जिनका बोध वाक्य यही है। यह अष्टाक्षरी छोटी सी पंक्ति समस्त भारत वर्ष में भाषा भदों के बावजूद सुप्रचलित कहा वत बन गई है।महा भारतमहाग्रंथ में 12 से 15 बार यह पंक्ति आती है।

उद्योग पर्व में कर्ण श्रीकृष्ण से, द्रोणाचार्य दुर्योधन से, भीष्मपर्व में भगवान व्यास धर्मपुत्र से, अनुशासन पर्व में भीष्म श्री कृष्ण से यह शाश्वत सत्य की पंक्ति कहते दिखाई पड़ते हैं

उपर्युक्त प्रसंगों पर संबंधित वक्ता परिस्थिति का विश्लेषण और मूल्यांकन करते हुए निष्कर्ष के रूप में बताता है- जहां धर्म है वहां जय है।

इसी प्रकार सुघोषित वाक्य है – सत्यं वद धर्मं चर - सत्य बोलो धर्म का आचरण करो। उसका स्त्रोत कौन जाने परंतु उसको सब जानते हैं। विद्यापूर्ति के पश्चात गुरुकुल से अपने घर लौटने वाले स्नातक युवा को गुरु वरद्वाराप्रदत्मूल्यवान आदेश है वह और संपूर्ण भारत उसको भली भांति जानता है। इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण और भी है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि भारत में धर्म का महत्व सबलोग मानते हैं।

महत्व को मात्र सिद्धांन्ति कस्तर पर नहीं , वरन जीवन के ठोस आधार पर भी प्रस्तुत करने हेतु अपने महान पूर्वजों ने हमारे सम्मुख धर्म के मूर्तिमंत्र पुरुष रत्नों को खड़ा किया। उदाहरणार्थ महर्षि वाल्मीकि के प्रश्न का समाधान करते हुए ऋषि नारद स्पष्ट करते हैं कि दशरथनंदन रामधर्मज्ञ है, वेधर्म के परीक्षक है , स्वयं के तथा स्वजनों के धर्म के संरक्षकहै। अर्थात यह अपेक्षित था कि यहां का आदर्श मानव धर्म का जानकार हो, व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक जीवन में व ह धर्म का सर्वतोमुखी संरक्षक हो।

धारण करने योग्य क्या है?

सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, क्षमा आदि।धर्म के नियमों का पालन करना ही धर्म को धारण करना है जैसे ईश्वर प्रणिधान, संध्या वंदन, श्रावण माह - व्रत, तीर्थ - चारधाम, दान -मकर संक्रांति,कुंभ पर्व, पंचयज्ञ, सेवाकार्य, पूजापाठ, **16** संस्कार और धर्म प्रचार आदि।...

लेकिन उन सभी कार्य व्यर्थ है जबकि आप सत्य के मार्ग पर नहीं हो। सत्य को जानने से अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौचादि सभी स्वत: ही जाने जा सकते हैं। अत: सत्य ही धर्म है और धर्म ही सत्य है।...

जो संप्रदाय, मजहब, रिलिजन और विश्वास सत्य को छोड़कर किसी अन्य रास्ते पर चल रही है वह

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

सभी अधर्म के ही मार्ग हैं। इसीलिए हित्दुत्व में कहा गया है सत्यंम शिवम सुंदरम।

धर्म- जगत का अधिष्ठान

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। अन्य ग्रह भी इसी प्रकार सूर्य की परिक्रमा करते हैं। उसकी एक सुनिश्चित समय सारणी है, श्री शनेश्वर की परिक्रमा 30 साल में पूरी होती है, और गुरु ग्रह की 12 साल में। उसी प्रकार इन ग्रहों के बीच पारस्परिक आकर्षण-शक्ति भी होती है। उसके साथ पृथ्वी जैसा ग्रह अपनी धूरी पर भी भमर्ण करता है। यह सारा सूर्य मंडल सृष्टि के प्रारंभ से आजतक पूर्णतः तालबद्ध,. कालबद्ध, सूत्रबद्ध चलता रहता है। इस वैश्विक सामंज स्यशाश्वत क्षमता का नाम है प्रकृति धर्म। धर्म के बिना यह संभव नहीं है। हमारे अत्यंत छोटे व्यावहारिक अलौकिक जगत में जब इस प्रकार के धर्म प्रवर्तन में छोटी फिसलन होते हैं तब विनाशकारी दुर्घटना घटती है। यदि प्रकृति के स्तर पर इस प्रकार की अत्यंत छोटी फिसलन होती है तो कल्पना तीत सर्वनाश अवश्यंभावी है। धर्म का महत्व इससे प्रतीत होता है।

धर्म से संपूर्णसृष्टिचक्रबाधितहै।सभीप्रकारकेचरअचर , सचेतनअचेतन ,

अपने अपने अस्तित्व के लिए धर्म पर आश्रित है। उसी में उसका अपनापन है। इसी आधार पर बताया जाता है कि जल का अपना धर्म है, अग्नि का अपना धर्म है,

पवन का अपना धर्म है। उसके बिना उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है और दुनिया से उसकी पहचान भी खत्म हो जाती है। अग्नि का धर्म है उष्णता। यदि कोई अग्नि के समान आकार वाली चीज दिखाई देती है और उसमें उष्णता नहीं केवल प्रकाश है तो हम कहेंगे कि वह अग्नि नहीं है। पवन का धर्म है चंचलता। यदि पवन अपना धर्म छोड़कर एक ही स्थान पर बिना हलचल के स्थिर रहता है तो उसको पवन कौन कहेगा? पृथ्वी का धर्म है सबको आधार देना। इसलिए तो उसे धरा, धरिणी, और वसुंधरा भी कहते हैं। अगर उसने उस धर्म को छोड़ दिया तो यह सारे शब्द अर्थ हीन हो जाएंगे। इस ब्रम्हांड में प्रत्येक छोटे पदार्थ का अपना अपना धर्म रहता है।उसी पर निर्भर है उसका अस्तित्व, उसका स्वभाव और पहचानना।

इस प्रकार सजीव प्राणियों का भी अपना अपना धर्म है। उसी मापदंड से उसे उसको पहचाना जाता है। भारतीय दर्शन के अनुसार मानव समस्त सृष्टि का अभिन्न अंग हैसृष्टि से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है. नहीं सृष्टि उसके केवल भोग के लिएबनी है। यद्यपि विधाताने उसको सच्चिदानंद के साक्षात्कार की आंतरिक क्षमता प्रदान की है, तब्भी भूतल पर जीने का अधिकार उसको उतना ही है जितना एक छोटी सी चींटी को। इसलिए धर्म सबकी सुस्थिरता एवं संधारणा के लिए है। उसकी परिधि में मानव एवं मानवेतर समान अधिकार से समाज समाविष्ट है। धर्म व अनुशासित जीवन क्रम है जिसमें लौकिक उन्नति(अविद्या) **तथा आध्यात्मिक परमगति** (विद्या) **दोनों की प्राप्ति होती है।**

मानव के लिए धर्म क्या है

दरअसल, धर्म मूल स्वभाव की खोज है। धर्म एक रहस्य है, संवेदना है, संवाद है और आत्मा की खोज है। धर्म स्वयं की खोज का नाम है। जब भी हम धर्म कहते हैं तो यह ध्वनीत होता है कि कुछ है जिसे जानना जरूरी है। कोई शक्ति है या कोई रहस्य है। धर्म है अनंत और अज्ञात में छलांग लगाना। धर्म है जन्म, मृत्यु और जीवन को जानना।

हिन्दू संप्रदाय में धर्म को, जीवन को धारण करने, समझने और परिष्कृत करने की विधि बताया गया है। धर्म को परिभाषित करना उतना ही कठिन है जितना ईश्वर को। दुनिया के तमाम विचारकों ने - जिन्होंने धर्म पर विचार किया है, अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं। **इस नजरिए से वैदिक ऋषियों का विचार सबसे ज्यादा उपयुक्त लगता है कि सृष्टि और स्वयं के हित और विकास में किए जाने वाले सभी कर्म धर्म हैं।**

हिन्दू धर्म (संस्कृत: सनातन धर्म) एक धर्म (या, जीवन पद्धति) है जिसके अनुयायी अधिकांशतः भारत, नेपाल और मॉरिशस में बहुमत में हैं। इसे विश्व का प्राचीनतम धर्म कहा जाता है। इसे 'वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म' भी कहते हैं जिसका अर्थ है कि इसकी

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से भी पहले से है।[1] विद्वान लोग हिन्दू धर्म को भारत की विभिन्न संस्कृतियों एवं परम्पराओं का सम्मिश्रण मानते हैं जिसका कोई संस्थापक नहीं है।

यह धर्म अपने अन्दर कई अलग-अलग उपासना पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए हैं।[2] अनुयायियों की संख्या के आधार पर ये विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। संख्या के आधार पर इसके अधिकतर उपासक भारत में हैं और प्रतिशत के आधार पर नेपाल में हैं। हालाँकि इसमें कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, लेकिन वास्तव में यह एकेश्वरवादी धर्म है।[3][4] [5]

इसे सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहते हैं। इण्डोनेशिया में इस धर्म का औपचारिक नाम "हिन्दु आगम" है। हिन्दू केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नहीं है अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है।[6]

1. **Knott 1998, p. 5.**
2. ऊपर जायें↑ **"Heterodox Hinduism: Supreme Court does well to uphold plural, eclectic character of the faith".**
3. ऊपर जायें↑ "श्रीमद्भगवद् गीता". **Archived from the original on** १३ अगस्त २००९. "श्रीमद्भगवद् गीता हिन्दू धर्म के पवित्रतम ग्रन्थों में से एक है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का सन्देश पाण्डव राजकुमार अर्जुन को सुनाया था। यह एक स्मृति ग्रन्थ है। इसमें एकेश्वरवाद की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है।"
4. ऊपर जायें↑ "श्रीमद्भगवद्गीता सातवाँ अध्याय". "यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति। तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥७- २१॥"
5. ऊपर जायें↑ "श्रीमद्भगवद् गीता सातवाँ अध्याय". "स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥७- २२॥"

ऊपर जायें↑ हिन्दुत्व शब्द की दोबारा व्याख्या से सुप्रीम कोर्ट का इंकार.

हिंदू धर्म के पवित्र ग्रन्थों को दो भागों में बाँटा गया है- श्रुति और स्मृति। श्रुति हिन्दू धर्म के सर्वोच्च ग्रन्थ हैं, जो पूर्णतः अपरिवर्तनीय हैं, अर्थात् किसी भी युग में इनमे कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। स्मृति ग्रन्थों में देश-कालानुसार बदलाव हो सकता है। श्रुति के अन्तर्गत

वेद : ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद ब्रह्म सूत्र व उपनिषद् आते हैं। वेद श्रुति इसलिये कहे जाते हैं क्योंकि हिन्दुओं का मानना है कि इन वेदों को परमात्मा ने ऋषियों को सुनाया था, जब वे गहरे ध्यान में थे। वेदों को श्रवण परम्परा के अनुसार गुरू द्वारा शिष्यों को दिया जाता था। हर वेद में चार भाग हैं- संहिता—मन्त्र भाग, ब्राह्मण-ग्रन्थ—गद्य भाग, जिसमें कर्मकाण्ड समझाये गये हैं, आरण्यक—इनमें अन्य गूढ बातें समझायी गयी हैं, उपनिषद्—इनमें ब्रह्म, आत्मा और इनके सम्बन्ध के बारे में विवेचना की गयी है। अगर श्रुति और स्मृति में कोई विवाद होता है तो श्रुति ही मान्य होगी। श्रुति को छोड़कर अन्य सभी हिन्दू धर्मग्रन्थ स्मृति कहे जाते हैं, क्योंकि इनमें वो कहानियाँ हैं जिनको लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी याद किया और बाद में लिखा। सभी स्मृति ग्रन्थ वेदों की प्रशंसा करते हैं। इनको वेदों से निचला स्तर प्राप्त है, पर ये ज़्यादा आसान हैं और अधिकांश हिन्दुओं द्वारा पढ़े जाते हैं (बहुत ही कम हिन्दू वेद पढ़े होते हैं)। प्रमुख स्मृति ग्रन्थ हैं:- इतिहास--रामायण और महाभारत, भगवदगीता, पुराण-**(18),** मनुस्मृति, धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र, आगम शास्त्र। भारतीय दर्शन के ६ प्रमुख अंग हैं-

सांख्य

दर्शन, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

वैदिक सनातन वर्णाश्रम व्यक्ति प्रवर्तित धर्म नहीं है। इसका आधार वेदादि धर्मग्रन्थ है, जिनकी संख्या बहुत बड़ी है। ये सब दो विभागों में विभक्त हैं-

1. इस श्रेणी के ग्रन्थ **श्रुति** कहलाते हैं। ये अपौरुषेय माने जाते हैं। इसमें वेद की चार संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, वेदांग, सूत्र आदि

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

ग्रन्थों की गणना की जाती है। आगम ग्रन्थ भी श्रुति-श्रेणी में माने जाते हैं।

2. इस श्रेणी के ग्रन्थ **स्मृति** कहलाते हैं। ये ऋषि प्रणीत माने जाते हैं। इस श्रेणी में **18** स्मृतियाँ, **18** पुराण तथा रामायण व महाभारत ये दो इतिहास भी माने जाते हैं।

वेद प्राचीनतम हिंदू ग्रंथ हैं। ऐसी मान्यता है वेद परमात्मा के मुख से निकले हुये वाक्य हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'विद्' शब्द से हुई है। विद् का अर्थ है जानना या ज्ञानार्जन, इसलिये वेद को "ज्ञान का ग्रंथ कहा जा सकता है। हिंदू मान्यता के अनुसार ज्ञान शाश्वत है अर्थात् सृष्टि की रचना के पूर्व भी ज्ञान था एवं सृष्टि के विनाश के पश्चात् भी ज्ञान ही शेष रह जायेगा। चूँकि वेद ईश्वर के मुख से निकले और ब्रह्मा जी ने उन्हें सुना इसलिये वेद को श्रुति भी कहा जाता हैं।

वेद संख्या में चार हैं जो हिन्दू धर्म के आधार स्तंभ हैं।

- ऋगवेद
- सामवेद
- अथर्ववेद
- यजुर्वेद[1]

वेद मानव जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है। जैसे कोई इंजीनियर किसी यंत्र को बनाता है तो वह किस उपयोग के लिए बना है और उसको उपयोग में लेने की क्या रीति है उसे दूसरा कोई मनुष्य नहीं बता सकता इसी प्रकार इस संसार को किस लिए बनाया गया है इस बात की पूर्ण जानकारी ईश्वर ने हमें वेद के रूप में प्रदान की है।पं. लेखराम आर्य ने वेदों का महत्व बताते हुए कहा कि जैसे बिना पढ़ाए कोई बालक विद्वान होकर दूसरों को सही रास्ता नहीं बना सकता उसी प्रकार वेद बढ़े बिना कोई भी मनुष्य इस संसार में स्वयं को और दूसरों को आनन्द में नहीं रख सकता। वेदों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रशासनिक व्यवस्था परस्पर संबंध आदि विषयों का विस्तृत ज्ञान भरा हुआ है।

वेद की उत्पत्ति सृष्टि के आदि में मानव की प्रथम पीढ़ी को 'श्रुति के रूप में चार ऋषियों के द्वारा ईश्वर ने प्रदान की तभी से यह श्रवण परंपरा से चलती रही साथ ही ताम्र पत्रों, भोजपत्र आदि के बाद कागज के पत्रों में पुस्तक रूप में मानव समाज को उपलब्ध हुई है। वस्तुतः वेद समस्त सत्य विद्याओं का ग्रंथ या क्षेत्र के लोगों के लिए सीमित नहीं है। अपितु यह ज्ञान सूर्य के प्रकाश के समान समस्त सृष्टि का पोषण एवं कल्याण के लिए है।'

वेद मंत्रों के तत्व को समझने के लिए हमें उपनिषद् एवं आरण्यकों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए क्योंकि प्रज्ञा शक्ति के द्वारा उपनिषद् आदि को हमें उनके भाष्य, कथा प्रसंग एवं उद्धरणों को समझने के लिए प्रदान किया है। अतः स्वाध्याय के बिना वेदों की ऋचाओं को समझना कठिन हो जाता है।

आज समाज में भ्रांति का मुख्य कारण यह है कि अधूरे अध्ययन एवं सीमित ज्ञान के कारण समाज वेदों के रहस्य से अछूता हो रहा है, अतः हमें तप स्वाध्याय एवं जिज्ञासा के साथ वेद मंत्रों को पढ़ना, पढ़ाना, समझना और समझाना होगा।

किसी भी वस्तु के स्वाभाविक गुणों को उसका धर्म कहते है जैसे अग्नि का धर्म उसकी गर्मी और तेज है। गर्मी और तेज के बिना अग्नि की कोई सत्ता नहीं। अत: मनुष्य का स्वाभाविक गुण मानवता है। यही उसका धर्म है।
कुरान कहती है – मुस्लिम बनो।
बाइबिल कहती है – ईसाई बनो।
किन्तु वेद कहता है – मनुर्भव अर्थात मनुष्य बन जावो (ऋग्वेद **10-53-6**)।

अत: वेद (**Ved**) मानवधर्म का नियम शास्त्र है। जब भी कोई समाज, सभा या यंत्र आदि बनाया जाता है तो उसके सही संचालन के लिए नियम पूर्व ही निर्धारित कर दिये जाते है परमात्मा (**god**) ने सृष्टि के आरंभ में ही मानव कल्याण के लिए वेदों के माध्यम से इस अद्भुत रचना सृष्टि के सही संचालन व सदुपयोग के लिए दिव्य ज्ञान प्रदान किया। अत: यह कहना गलत है कि वेद केवल आर्यों (हिंदुओं) के लिए है, उन पर जितना हक हिंदुओं का है उतना ही मुस्लिमों का भी है।

मानवता का संदेश देने वाले वैदिक धर्म (**vedic religion**) के अलावा दूसरे अन्य धर्म किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाये गए। धर्म चलते समय उन्होने अपने को ईश्वर का दूत व ईश्वर पुत्र बताया, ताकि लोग उनका अनुसरण

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

करें। जैसे – इस्लाम धर्म पैगंबर मुहम्मद (**Prophet Muhammad)** द्वारा, ईसाई धर्म ईसा-मसीह (**Jesus-Christ)** द्वारा और बौद्ध धर्म महात्मा बुद्ध (**Buddha)** द्वारा आदि। क्योंकि सभी अनुयायियों को धर्म के चलाने वाले पर विश्वास लाना आवश्यक है। अत: ये धर्म नहीं, मत है। ये सब मत वैज्ञानिक (**scientific)** भी नहीं है, जबकि धर्म और विज्ञान का आपस में अभिन्न संबंध है। जहाँ धर्म है वहाँ विज्ञान है। देखो, बाइबिल में सूर्य को पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करना बताया है जबकि वेद कहता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों जल सहित घूमती है। इतना ही नहीं विज्ञान का कोई भी क्षेत्र हो, वेदों से नहीं छूटा। अत: जो मत विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, वे धर्म भी नहीं है। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते है कि 'यतो धर्मस्ततो जय:' अर्थात जहाँ धर्म है वहाँ विजय है आगे आता है कि 'वेदोऽखिलो धर्ममुलं' अर्थात वेद धर्म का मूल है।

वेदों के आधार पर महर्षि मनु (**manu)** ने धर्म के **10** लक्षण बताए है :-

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:
धीर्विद्या सत्यमक्रोधोदशकं धर्म लक्षणमं ॥

(1) धृति :- कठिनाइयोंसे न घबराना।

(2) क्षमा :- शक्ति होते हुए भी दूसरों को माफ करना।

(3) दम :- मन को वश में करना (समाधि के बिना यह संभव नहीं) ।

(4) अस्तेय :- चोरी न करना। मन, वचन और कर्म से किसी भी परपदार्थ या धन का लालच न करना।

(5) शौच :- शरीर, मन एवं बुद्धि को पवित्र रखना।

(6) इंद्रिय-निग्रह :- इंद्रियों अर्थात आँख, वाणी, कान, नाक और त्वचा को अपने वश में रखना और वासनाओं से बचना।

(7) धी :- बुद्धिमान बनना अर्थात प्रत्येक कर्म को सोच-विचार कर करना और अच्छी बुद्धि धारण करना।

(8) विद्या :- सत्य वेद ज्ञान ग्रहण करना।

(9) सत्य :- सच बोलना, सत्य का आचरण करना।

(10) अक्रोध :- क्रोध न करना। क्रोध को वश में करना।

इन दश नियमों का पालन करना धर्म है। यही धर्म के दस लक्षण है। यदि ये गुण या लक्षण किसी भी व्यक्ति में है तो वह धार्मिक है। मनुष्य बिना सिखाये अपने आप कुछ नहीं सीखता है। जबकि ईश्वर ने अन्य जीवों को कुछ स्वाभाविक ज्ञान दिया है जिससे उनका जीवन चल जावे। जैसे :- मनुष्य को बिना सिखाये न चलना आवे, न बोलना, न तैरना और न खाना आदि। जबकि हिरण का बच्चा पैदा होते ही दौड़ने लगता है, तैरने लगता है। यही बात अन्य गाय,भैंस,शेर,मछली,सर्प,कीट-पतंग आदि के साथ है। अत: ईश्वर ने मनुष्य के सीखने के लिए भी तो कोई ज्ञान दिया होगा जिसे धर्म कहते है। जैसे भारत के संविधान को पढ़कर हम भारत के धर्म, कानून, व्यवस्था, अधिकार आदि को जानते है वैसे ही ईश्वरीय संविधान वेद को पढ़कर ही हम मानवता व इस ईश्वर की रचना सृष्टि को जानकर सही उन्नति को प्राप्त कर सकते है। आर्यसमाज निरंतर इसी वेद प्रचार के विश्व शांति व उन्नति के कार्य में यथासामर्थ्य लगा हुआ है। यदि विश्व के किसी भी कोने के मनुष्य को वेदों को समझने के लिए आर्यसमाज का सहयोग लेना ही होगा अन्यथा गलत व्याख्या रूप में आपको मेक्समूलर आदि के किए ग्वारु भाष्य वाले वेद ही मिलेंगे ।

उपनिषद (रचनाकाल **1000** से **300** ई.पू. लगभग)[1] कुल संख्या **108**। भारत का सर्वोच्च मान्यता प्राप्त विभिन्न दर्शनों का संग्रह है। इसे वेदांत भी कहा जाता है। उपनिषद भारत के अनेक दार्शनिकों, जिन्हें ऋषि या मुनि कहा गया है, के अनेक वर्षों के गम्भीर चिंतन-मनन का परिणाम है। उपनिषदों को आधार मानकर और इनके दर्शन को अपनी भाषा में रूपांतरित कर विश्व के अनेक धर्मों और विचारधाराओं का जन्म हुआ। उपलब्ध उपनिषद-ग्रन्थों की संख्या में से ईशादि **10** उपनिषद सर्वमान्य हैं। उपनिषदों की कुल संख्या **108** है। प्रमुख उपनिषद हैं-

ईश, केन, कठ, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, श्वेताश्वतर, बृहदारण्यक, कौषीतकि, मुण्डक, प्रश्न, मैत्राणीय आदि। **आदि शंकराचार्य ने जिन 10 उपनिषदों र अपना भाष्य लिखा है, उनको प्रमाणिक माना गया है।**

उपनिषद परिचय

भारतीय-संस्कृति की प्राचीनतम एवं अनुपम धरोहर के रूप में वेदों का नाम आता है। 'ऋग्वेद' विश्व-साहित्य की प्राचीनतम पुस्तक है। मनीषियों ने 'वेद' को ईश्वरीय 'बोध' अथवा 'ज्ञान' के रूप में पहचाना है। विद्वानों ने उपनिषदों को वेदों का अन्तिम भाष्य 'वेदान्त' का नाम दिया है। इससे पूर्व वेदों के लिए

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

'संहिता' 'ब्राह्मण' और 'आरण्यक' नाम भी प्रयुक्त किये जाते हैं। उपनिषद ब्रह्मज्ञान के ग्रन्थ हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है- 'समीप बैठना' अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरु के समीप बैठना। इस प्रकार उपनिषद एक ऐसा रहस्य ज्ञान है जिसे हम गुरु के सहयोग से ही समझ सकते हैं। ब्रह्म विषयक होने के कारण इन्हें 'ब्रह्मविद्या' भी कहा जाता है। उपनिषदों में आत्मा-परमात्मा एवं संसार के सन्दर्भ में प्रचलित दार्शनिक विचारों का संग्रह मिलता है। उपनिषद वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग तथा सारभूत सिद्धान्तों के प्रतिपादक हैं, अतः इन्हें 'वेदान्त' भी कहा जाता है। इनका रचना काल **800** से **500** ई.पू. के मध्य है। उपनिषदों ने जिस निष्काम कर्म मार्ग और भक्ति मार्ग का दर्शन दिया उसका विकास श्रीमद्भागवतगीता में हुआ।उपनिषदों के रचयिता ऋषि-मुनियों ने अपनी अनुभूतियों के सत्य से जन-कल्याण की भावना को सर्वोपरि महत्त्व दिया है। उनका रचना-कौशल अत्यन्त सहज और सरल है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि इन ऋषियों ने कैसे इतने गूढ़ विषय को, इसके विविधापूर्ण तथ्यों को, अत्यन्त थोड़े शब्दों में तथा एक अत्यन्त सहज और सशक्त भाषा में अभिव्यक्त किया है। भारतीय दर्शन की ऐसी कोई धारा नहीं है, जिसका सार तत्त्व इन उपनिषदों में विद्यमान न हो। सत्य की खोज अथवा ब्रह्म की पहचान इन उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय है। जन्म और मृत्यु से पहले और बाद में हम कहां थे और कहां जायेंगे, इस सम्पूर्ण सृष्टि का नियन्ता कौन है, यह चराचर जगत् किसकी इच्छा से परिचालित हो रहा है तथा हमारा उसके साथ क्या सम्बन्ध है— इन सभी जिज्ञासाओं का शमन उपनिषदों के द्वारा ही सम्भव हो सका है।

- उपनिषदों में ऋषियों ने अपने जीवन-पर्यन्त अनुभवों का निचोड़ डाला है। इसी कारण विश्व साहित्य में उपनिषदों का महत्त्व सर्वोपरि स्वीकार किया गया है।
- जीवन के सभी विचार और चिन्तन बेमानी सिद्ध हो सकते हैं, किन्तु जीव और परमात्मा के मिलन के लिए किया गया अध्यात्मिक चिब्तब कभी बेमानी नहीं हो सकता। वह शाश्वत है, सनातन है और जीवन के महानतम लक्ष्य पर पहुंचाने वाला सारथि है। जिस प्रकार महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन के लिए सारथि का कार्य सम्पन्न किया था, उसी प्रकार जन-जन के लिए उपनिषदों ने यह महान् का कार्य सम्पन्न किया है। वह आलोक है, जो समस्त मानवता के अज्ञानपूर्ण अन्धकार को दूर करने के लिए ऋषियों द्वारा अवतरित कराया गया है। इसीलिए उपनिषदों का महत्त्व, सर्व-कल्याण का श्रेष्ठतम प्रतीक है।

वेद एवं सम्बंधित उपनिषद

वेद	**सम्बन्धित उपनिषद**
1- ऋग्वेद	ऐतरेयोपनिषद
2- यजुर्वेद	बृहदारण्यकोपनिषद
3- शुक्ल यजुर्वेद	ईशावास्योपनिषद
4- कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीयोपनिषद, कठोपनिषद, श्वेताश्वतरोपनिषद, मैत्रायणी उपनिषद
5- सामवेद	वाष्कल उपनिषद, छान्दोग्य उपनिषद, केनोपनिषद
6- अथर्ववेद	माण्डूक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद

पुराण, हिंदुओं के धर्मसंबंधी आख्यानग्रंथ हैं जिनमें सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषियों, मुनियों और राजाओं के वृत्तात आदि हैं। ये वैदिक काल के काफ़ी बाद के ग्रन्थ हैं, जो स्मृति विभाग में आते हैं। भारतीय जीवन-धारा में जिन ग्रन्थों का महत्वपूर्ण स्थान है उनमें पुराण भक्ति-ग्रंथों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। अठारह पुराणों में अलग-अलग देवी-देवताओं को केन्द्र मानकर पाप और पुण्य, धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म की

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 1 Jan-Feb 2021, pp: 191-200 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

गाथाएँ कही गई हैं। कुछ पुराणों में सृष्टि के आरम्भ से अन्त तक का विवरण किया गया है। इनमें हिन्दू देवी-देवताओं का और पौराणिक मिथकों का बहुत अच्छा वर्णन है।

कर्मकांड (वेद) से ज्ञान (उपनिषद्) की ओर आते हुए भारतीय मानस में पुराणों के माध्यम से भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित हुई है। विकास की इसी प्रक्रिया में बहुदेववाद और निर्गुण ब्रह्म की स्वरूपात्मक व्याख्या से धीरे-धीरे मानस अवतारवाद या सगुण भक्ति की ओर प्रेरित हुआ।

पुराणों में वैदिक काल से चले आते हुए सृष्टि आदि संबंधी विचारों, प्राचीन राजाओं और ऋषियों के परंपरागत वृत्तांतों तथा कहानियों आदि के संग्रह के साथ साथ कल्पित कथाओं की विचित्रता और रोचक वर्णनों द्वारा सांप्रदायिक या साधारण उपदेश भी मिलते हैं। पुराण उस प्रकार प्रमाण ग्रंथ नहीं हैं जिस प्रकार श्रुति, स्मृति आदि हैं।

धर्म शाश्वत है किंतु कर्कश नहीं

धर्म शाश्वत है और अपरि वर्तनीय है। क्योंकि उसको संपूर्ण चराचर को सुदृढ़ , सुव्यवस्थित रखना है। किंतु देशकाल भेद के कारण धर्म को प्रायोगिक जीवन में युगानुकूल एवं स्थानानुकुल मार्ग दर्शन भी देना होता है। अतःधर्मतांत्रिक दृष्टि से स्थिर है और व्यावहारिक दृष्टि से गतिमान है। इसे ही सनातन कहते हैं। जैसे आज समझा जाता है वसे सनातन का अर्थ रूढ़िवादी, कर्कश, दकिया नूसी आदि नहींहै।सनऔरतन 2
शब्दों का जोड़ है सनातन। संन का अर्थ है पुराना , तन का अर्थ है अद्यतन और सनातन का अर्थ है यद्यपिपुरानानवीन। विज्ञ लोग उदाहरण देतेहैं। सूर्योदय सबसे पुराना है। सबसे नया भी, अतः सनातन है।

सारांश

धर्म समस्त सृष्टि का अधिष्ठान है। नाना रुपी नाना भावीनर -नारियों से बना मानव समा ज उसी अधिष्ठान पर टिक सकता है। धर्म व्यक्ति पर कनहीं, प। रस परिक है। छोटी बड़ी इकाईयो के अनुरूप धर्म का वर्तुल भी छोटा बड़ा हो सकता है उसी समय वह हमेशा बड़े की ओर बढ़ने का प्रयास करता है ,।धर्म स्वयम प्रेरित है और संस्कृति की ओर ले जाता है। वह कर्कश नहीं सनातन है। धर्म संपूर्ण विश्व को भारत की दी हुई अद्वितीय एवं अमूल्य देन है।
धर्म मानव समूह को वेदों के अधिष्ठान पर अभ्युदय एवं निश्रेयस की ओर ले जाने वाला जीवन विधान है। संक्षेप में वि ज्ञान की दृष्टि से धर्म वस्तु का निसर्ग जन्य गर्ण है नैतिक वैधानिक दृष्टि से कर्तव्य है तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पंथसं प्रदाय है। सामान्यतः
सदाचार और नियम है सर्वोपरि महानतम कर्तव्य है।
इससे सिद्ध होता है कि धर्म जितनाउया उतना गहराहै, जितना व्यष्टि केंद्रित है उतना समष्टि व्यापक है , जितना पुराना है उतना नयाहै , जितना चिरंतन है उतना गतिमान है , जितना बहुआयामी है उतना एकाग्र है। वह सर्व भूतहित का अमृत कलश है, जगन मंगल का कल्पवृक्ष है।
नमोधर्म। यमहते , नमः कृष्णाय वेध से।महान धर्म का नमस्कार.....विधाता कृष्ण का नमस्कार।

International Journal of Advances in Engineering and Management
ISSN: 2395-5252

IJAEM

Volume: 03 Issue: 01 DOI: 10.35629/5252

www.ijaem.net
Email id: ijaem.paper@gmail.com